International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

सौरिया पहाड़िया जनजातीय समुदाय की आर्थिक समस्या का एक ऐतिहासिक विश्लेषण

A Historical Analysis of the Economic Problem of the Sauria Paharia Tribal Community

Dr. Sandeep Kumar Mandal

Head, Department of History, Degree College Mahagama Godda, Jharkhand 814154

प्रस्तावना :-

झारखंड भारत का एक प्रमुख जनजातीय बहुल राज्य है। झारखंड के कुल जनसंख्या का लगभग 26 प्रतिशत जनजाति समुदाय से संबंध रखते हैं, जो यहां की सामाजिक, सांस्कृतिक पहचान प्रदान करती है। संथाल, मुंडा, हो, उरांव, असुर, बीरहोर, माल पहाड़िया और सौरिया पहाड़िया जैसी अनेक जनजाति इस राज्य की मुख्य आत्मा है। यह जनजातीय की जीवन शैली जंगल पहाड़ और प्राकृतिक संसाधनों के साथ जुड़ा हुआ है। इस जनजातियों के सामाजिक जीवन में काफी परिवर्तन आया है, लेकिन सौरिया पहाड़िया जनजाति, शिक्षा, रोजगार, चिकित्सा आदि जैसे अनेक चुनौतियों से घिरा हुआ है। प्राप्त आंकड़ों से यह पता चलता है कि सौरिया पहाड़िया का निवास स्थान दुर्गम स्थान पर है। जिसके कारण विकास की मुख्य धारा से वंचित रहे हैं। अधिकांश सौरिया पहाड़िया लोगों का कहना था कि हमारे पास आय का कोई साधन नहीं है। कभी-कभी समय के अनुसार मजदूरी का कार्य मिल जाता है बाकी समय खाली ही रहना पड़ता है। आय का साधन नहीं होने के वजह से यह लोग शिक्षा चिकित्सा एवं अनेक मूलभूत आवश्यकताओं से वंचित रह जाते हैं। कुछ सौरिया पहाड़िया लोगों का कहना था कि हमारा निवास स्थान शहर से कटे होने के वजह से राजनीतिक लोगों का ध्यान बहुत कम आकर्षित होता है। जिसके कारण हमारे समस्या को प्रमुखता से नहीं उठाया जाता है और ना ही हम लोगों के स्थिति पर विचार किया जाता है। हमारे पास बंजर भूमि है जहां पर पूरी तरह से कृषि करना संभव नहीं है, इसलिए कभी-कभी हम जैसे गरीब लोगों को खाद्य पदार्थ की कमी का सामना करना पड़ता है।

कुंजी शब्द :- बंजर भूमि, जंगल मे निवास स्थान, कोयला खदान मे कार्य और गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन

झारखंड राज्य के गोड्डा जिले के बोआरीजोर प्रखंड के बड़ा भोंडाय ग्राम पंचायत के छोटा पहाड़पुर गांव के सौरिया पहाड़िया जनजातियों से तथ्य प्राप्त किया गया तो पता चला कि यहां की सौरिया पहाड़िया अत्यंत गरीब है। यह गांव में जितने जनजाति समुदाय के लोग निवास करते हैं, वह सभी लोग गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन कर रहे हैं। अध्ययन से पता चला कि यहां पर किसी प्रकार का कोई कृषि नहीं होता है, क्योंकि यहां की जनजातीय समाज एक दुर्गम स्थान पर जंगल में निवास करते हैं। यह लोग आरम्भ से ही प्रकृति के गोद में निवास करते आ रहे हैं तथा अपना जीवन पारंपरिक तरीके से यापन करते आ रहे हैं। यहां पर किसी प्रकार की कोई रोजगार का सुविधा उपलब्ध नहीं है यहां तक की जंगल में निवास स्थान होने की वजह से इन लोगों के पास प्राइमरी विद्यालय या आंगनवाड़ी विद्यालय भी नहीं है। यहां तक की प्राइमरी हेल्थ सेंटर भी नहीं है, इन लोगों को जब कोई स्वास्थ्य समस्या होता है तब यह लोग बहुत मुश्किल से बाहर इलाज के लिए जाते हैं। उनके निवास स्थान तक सड़क भी नहीं बनाया गया है, क्योंकि यह खुद जंगल में निवास करते हैं और फॉरेस्ट विभाग वाले जंगल होने की वजह से सड़कों का निर्माण नहीं करने देते हैं। यहाँ के सौरिया पहाड़िया का जीवन अत्यंत दुखदाई है। इन लोगों को घर के सामने कोयला खदान है। जहां से कोयला निकाला जाता है, इन लोगों को कभी- कभी इस खदान में कार्य मिलता है, इसके अतिरिक्त यहां के जनजातीय समाज के पुरुष लोग कोयला चुनने का कार्य करते हैं।

कोयला चुन-चुन कर बेचते हैं, अगर यह लोग दिन भर कोयला चुनने का कार्य करें तो एक दिन मे 200 से 300 रु आय प्राप्त कर लेते हैं। इतनी कम आय से इनका जीवन यापन करना बहुत मुश्किल है, यह लोग किसी प्रकार से अपना जीवन गुजारा निर्वाह कर रहे हैं। यह गांव ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (ECL) का हो चुका है, यह गांव माइग्रेट होकर कही दूसरे स्थान पर जाने वाला है और अभी तक यह लोगों के जो ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (ECL) ने यह गांव लिया है न तो पैसा दिया है और न ही किसी को नौकरी दिया है। यह गांव में कोई व्यक्ति नौकरी नहीं करता है, सिर्फ और सिर्फ कोयला चुनकर ही और उसे बेचकर अपना जीवन का बसेरा कर रहे हैं। कुछ ऐसे लोग हैं जो जानवर पालने के तौर पर बकरी का पालन करते हैं उनसे कुछ इनका आय प्राप्त हो जाता है फिर भी यह काम कुछ ही लोग कर रहे हैं। कुछ सौरिया पहाड़िया लोगों का कहना था कि वर्तमान समय में जो कोयला खदान है, उस स्थान पर खुद का भूमि हुआ करता था। जिस पर वे लोग कृषि करते थे और उनसे कुछ आय प्राप्त करते थे। लेकिन वह भूमि ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (ECL) ने ले लिया जिसके कारण इन लोगों को वह भूमि छोड़ना पड़ा। भूमि जाने के बाद यह लोग जंगल के किनारे जाकर झोपड़ी बनाकर निवास कर रहे हैं। इन लोगो के पास पक्का का मकान नहीं है, सभी के पास झोपड़ी है और झोपड़ी में ही यह लोग निवास करते है।

साहित्य पुनरावलोकन:-

झारखंड राज्य में सौरिया पहाड़िया जनजातीय समुदाय की मुख्य रूप से आबादी संथाल परगना के क्षेत्र में है। सौरिया पहाड़िया का मिथक बताता है कि "बेरु गोसाई" ने ब्रह्मांड बनाने के बाद सबसे पहले मलेर को बनाया। मलेर को रहने के लिए पहाड़ों में भेज दिया और उसने अपनी आजीविका के लिए पहाड़ों और जंगलों का भरपूर उपयोग किया। वे लोग यहां झूम खेती करने लगे इस प्रकार उनके आर्थिक जीवन का विस्तार हुआ है। आरंभ में इनका आर्थिक जीवन बिल्कुल न्यूनतम था मगर समय के साथ-साथ बदलाव आया है(**Choudhury, 2018**)। झारखंड राज्य में सौरिया पहाड़िया संख्यात्मक रूप से एक छोटी जनजाति है। यह झारखंड राज्य के राजमहल पहाड़ियों की श्रृंखला में निवास करती है। यह जनजाति घने जंगलों में निवास करती है जिसके कारण इसकी स्थिति दयनीय है। इनकी आबादी भी कम होते जा रही है, इनके जीविका का मुख्य साधन कटाई जलाकर खेती करना है। सौरिया पहाड़िया की अर्थव्यवस्था और आजीविका के हर पहलू पर जंगल का प्रभाव दिखाई देता है, लेकिन आजकल सौरिया पहाड़िया अपने प्राकृतिक निवास स्थान से पलायन कर रहे हैं। क्योंकि इनके पास आजीविका का कोई साधन नहीं है, आमतौर पर वह अब अस्थाई खेती कर रहे हैं और इसी के साथ सड़क निर्माण, भवन निर्माण गैर मजदूरी, सर पर बोझा ढोने वाले कार्य, रिक्शा चलाना और कम वेतन वाली नौकरी आदि जैसे कार्य में रुचि ले रहे हैं(**Choudhary, 2024**)। ऐतिहासिक रूप से पहाड़ी लोग देश के मूल निवासियों के वंशज हैं। कभी इनका राजमहल पहाड़ियों की चोटियों पर अधिपत्य था, वे सदियों तक पहाड़ी क्षेत्र पर शासन करते थे। सरकार ने उन्हें अनदेखा किया और उन्हें भाग्य पर छोड़ दिया जिसके कारण यह लोग तीव्र पिछड़ेपन और गरीबी में चले गए। राजमहल पहाड़ियों पर निवास करने वाला सौरिया पहाड़िया जनजाति के लोगों का रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधा और पेयजल आदि का इन लोगों कों काफी समस्या का सामना करना पड़ा। ऐसी समस्याओं ने उनके अस्तित्व को खतरा में डाल दिया। 1954 में बिहार के मुख्य मंत्री ने पहाड़ की चोटियों पर पहाड़िया जनजाति के सामाजिक-आर्थिक स्थिति जानने के लिए पहाड़ की चोटियों पर गमन किया और वहां की स्थिति देखा तो वह दंग रह गए थे(**Kumar & Verma, 2022**)। भारत में लगभग 705 जनजाति समुदाय के लोग निवास करते हैं। जिनमें से 32 प्रकार की जनजाति झारखंड राज्य में स्थाई तौर पर निवास करती है। इनमें भी आठ (8) प्रकार की जनजाति प्राचीन है, जिनमें से एक सौरिया पहाड़िया भी है। यह जनजाति सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक दृष्टि से बहुत कमजोर जनजाति है। इस जनजाति के पास अनेक समस्या है जिनमें से आर्थिक समस्या मुख्य समस्या है। सौरिया पहाड़िया जनजाति की आज भी आर्थिक जिनमिन समस्या है(**Kachhap & Saw, 2016**)। आधुनिकरण आज भी आदिवासी लोगों के एक हिस्से को छू नहीं पाया है, यही आदिवासी मूल निवासी है जिन्हें आदिवासी भी कहा जाता है। भारत में लगभग 705 जनजातीय समूह है जिन्हें सरकार द्वारा अनुसूचित जनजाति कहा जाता है। जिसकी कुल आबादी 10. 43 करोड़ है। 705 जनजातियों में से 75 जनजातीय समूह को पी. वी. टी. (विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह) माना जाता है जिनकी विशेषताएं आर्थिक पिछड़ापन, भौगोलिक अलगाव, पहाड़ों में निवास स्थान, आधुनिकता का स्वीकार करने में प्रतिरोध, अपने संस्कृति को बनाएं रखने में कठोरता, कम साक्षरता दर और घटती जनसंख्या आदि है। इन्हीं जनजाति में से एक सौरिया पहाड़िया जनजाति है जिनकी आर्थिक समस्या आज भी इनकी बीच एक चुनौती बना हुआ है। झारखंड के कुछ आदिम जनजातियों में से एक सौरिया पहाड़िया आदिवासी है। 1930 से इन्हें आदिवासी कहा जाता है, यह जनजाति

बहुत पहले से राष्ट्र की मिट्टी में निवास करते आ रहे हैं। उनकी संस्कृति ,आचरण, रीति-रिवाज, विश्वास, सामाजिक स्थिति, सामाजिक निम्न और मानदंड अन्य मुख्य धारा के लोगों से अलग है। यह लोग मूल रूप से आधुनिक सभ्यता से दूर पहाड़ी क्षेत्र में निवास करना अधिक पसंद करते हैं, ये लोग प्रकृति के तो करीब अपने आप को रख पाए है मगर विकास से कोसो दूर है**(Dutta & Sarkar, 2019)**। पहाड़िया जनजाति झारखंड राज्य के राजमहल पहाड़ियों की एक कम ज्ञात जनजाति है। इस जनजाति को झारखंड की आदिम जनजाति के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। आदिकाल से ही यह जनजाति झारखंड में निवास करते आ रहे हैं। यह जनजाति एक समय पर घने जंगलों में निवास करती थी, अन्य समूह से अलग-अलग स्थानो पर निवास करती थी लेकिन पिछले दो दशकों से यह जनजाति रोजगार के तलाश में कस्बा एवं शहरों की ओर गमन करना आरंभ किया है ताकि उन्हें रोजगार का अवसर प्राप्त हो सके। जलवायु परिवर्तन एवं वनों की कटाई के कारण आज की स्थिति बदल गई है। पहाड़ों पर कुछ छोटे-मोटे पेड़ पौधे नजर आते हैं, जंगल के वनोपज और खेती अब पहाड़िया लोगों के लिए पर्याप्त नहीं है इसलिए मजबूरन उन्हें अनेक स्थानों पर अपने आजीविका के लिए पलायन करना पड़ रहा है**(Tudu & Michael, 2018)**। झारखंड राज्य में जनजातीय समाज की आजीविका का मुख्य साधन कृषि है। जनजातीय समाज के लोग कृषि कार्य में संलग्न रहते हैं तथा वे लोग मुख्य रूप से धान, गेहूं , मक्का, दलहन एवं हरा सब्जियां उगाते हैं, लेकिन इन लोगों के पास उचित कृषि भूमि, सिंचाई की सुविधा, कृषि उपकरण आदि का अभाव है। इसलिए यह लोग पर्याप्त मात्रा में फसल नहीं उगा पाते हैं जिसके कारण दूसरे स्रोतों पर निर्भर हैं**(Choudhary,2018)**। झारखंड की आदिवासी समुदाय का स्वास्थ्य उतना अच्छा नहीं है तथा स्वास्थ्य संबंधी समस्या हमेशा जनजातीय समाज में पाया गया है। जहां जनजातीय समुदाय के लोग सामाजिक, आर्थिक समस्या का सामना कर रहे हैं वही संक्रामक, बीमारी, दस्त, पेचिश, त्वचा रोग, श्वसन, संक्रमण, खांसी, खसरा, कुष्ठ रोग और मलेरिया आदि जैसे गंभीर बीमारियों का सामना भी कर रहे हैं। क्योंकि इनके पास आर्थिक समस्या बहुत अधिक है और यह लोग अपने न्यूनतम आवश्यकताओं की भी पूर्ति नहीं कर पाते हैं तथा महंगा इलाज नहीं ले पाते हैं। इसलिए इनके पास आर्थिक समस्या के साथ-साथ स्वास्थ्य समस्या भी लगा रहता है**(Sunita, 2023)**। आजीविका जीवन की आवश्यकता की पूर्ति करने के लिए एक साधन है। भारत में आदिवासी समुदाय की बीच आजीविका एक जटिल गतिशील और बहु आयामी घटना है। झारखंड में विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह के पास अनेक समस्या है जैसे कम जनसंख्या, कम साक्षरता दर, इनका मुख्य जीविका वन एवं कृषि पर आधारित आदि। सौरिया पहाड़िया जनजाति समाज के मुख्य धारा से दूर हैं और लंबे समय से दूर रह रहे हैं। कम साक्षरता के कारण सौरिया पहाड़िया जनजाति के बीच शिक्षा, चिकित्सा और रोजगार आदि जैसे अनेक समस्या का यह लोग सामना कर रहे हैं**(Marandi& Patel, 2022)**।

शोध अंतराल :- झारखंड आदिवासी बहुल राज्य है। यहां 32 प्रकार के जनजाति निवास करती है जिसमें सौरिया पहाड़िया जनजाति का विकास लगभग नहीं के बराबर हुआ है। संथाल, मुंडा, आदि जनजाति का विकास बड़े पैमाने पर हुआ है, लेकिन सौरिया पहाड़िया जनजाति के लोग आज भी अपनी मूलभूत आवश्यकताओं के लिए तरस रहे हैं। इस जनजाति पर शोध कार्य बहुत कम हुआ है, इसलिए सौरिया पहाड़ियां पर शोध कार्य पूर्ण करने के लिए यह विषय का चुनाव किया गया है। ताकि सौरिया पहाड़िया के वर्तमान समस्या का उजागर किया जा सके।

सौरिया पहाड़िया की समस्या :- सौरिया पहाड़िया जनजातियों की अनेक समस्याएं हैं। सौरिया पहड़िया जनजाति का जहां निवास स्थान है वह एक वीरान जगह है तथा चारों तरफ से जंगल ही जंगल है। उनके निवास स्थान के निक्ट ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड है। यह लोग जंगल में झोपड़ी बनाकर निवास करते हैं तथा उनके यहां सड़के भी नहीं है जिसके कारण इनको अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। यह जनजाति आर्थिक रूप से बहुत कमजोर है, सभी लोग गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन कर रहे हैं। सभी लोग अशिक्षित हैं और यह लोग शिक्षा के महत्व को नहीं समझ पाए हैं। आर्थिक समस्या के वजह से अपने बच्चों को पढ़ाई के लिए बाहर नहीं भेज पा रहे हैं। ईनके निवास स्थान के करीब आंगनबाड़ी या प्राथमिक विद्यालय जैसे कोई शिक्षा संस्थान नहीं है इसलिए यह लोग अंधेरा में ही अपना जीवन यापन कर रहे हैं।

शोध के उद्देश्य :- सौरिया पहाड़िया जनजाति की आर्थिक स्थिति एवं उनके समस्याओं को समझना।

आंकड़े संकलन की विधि :- यह शोध सौरिया पहाड़िया जनजाति पर आधारित है। इसलिए यह शोध कार्य पूर्ण करने के लिए गुणात्मक और मात्रात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग करके तथ्यों का संकलन किया गया है। गुणात्मक शोध के अंतर्गत सौरिया पहाड़िया जनजातियों की उनके व्यवहार, कारणों, व्यक्तिक लेखो, साक्षात्कारों तथा सहभागी प्रेक्षण विधियों का प्रयोग करके तथ्य का संकलन किया गया है। जबकि मात्रात्मक शोध प्रविधि के अंतर्गत सर्वेक्षण, इंटरव्यू अवलोकन, रिकॉर्ड और रिपोर्ट के रिव्यू आदि के द्वारा तथ्य का संकलन किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र झारखंड राज्य के गोंडा जिला के बोआरीजोर प्रखंड के बड़ा भोंडाय ग्राम पंचायत के छोटा पहाड़पुर गांव के 40 पुरुषों को साक्षात्कार कर उनकी अनेक समस्याओं से संबंधित तथ्य प्राप्त किया गया है।

संरचित साक्षात्कार अनुसूची :-

सौरिया पहाड़िया के समस्याओं से संबंधित तथ्य को संग्रहण करने के लिए संरक्षित साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग किया गया है। इस शोध के अंतर्गत इस जनजाति की क्या समस्या है और वह कैसे अपने जीवन को यापन कर रहे हैं, से संबंधित साक्षात्कार कर वास्तविक तथ्य को प्राप्त किया गया है। साक्षात्कार लेने वक्त अनेक बिंदुओं पर धय्यान को आकर्षित किया गया था ताकि यह शोध कार्य को वैज्ञानिक रूप प्रदान किया जा सके।

विश्लेषण :-

झारखंड राज्य के गोंडा जिला के बड़ा बोंडाय ग्राम पंचायत के अंतर्गत आने वाले पहाड़पुर गांव के सौरिया पहाड़िया जनजातियों से जब तथ्य प्राप्त किया गया। तब यह पता चला कि यह जनजातियों के पास अनेक समस्याएं हैं। क्योंकि यह जनजाति मूल रूप से प्रकृति की गोद निवास करती है जहां बाहरी संस्कृति का कोई प्रभाव नहीं है। यह लोग पारंपरिक तरीके से अपने जीवन को यापन कर रही हैं। यहां देखा गया की इस गांव के अंतर्गत न तो कोई प्राइमरी स्वास्थ्य केंद्र है और न ही प्राथमिक विद्यालय है और न ही आंगनबाड़ी केंद्र है। यहां तक की उनके निवास स्थान तक सड़क निर्माण भी नहीं हुआ है। यह जनजाति मेहनत मजदूरी का कार्य भी करें तो जंगल से शहर की ओर जाना पड़ता है और करीब 8 किलोमीटर दूरी का सफर करना पड़ता है। दुर्गम स्थान पर निवास होने की वजह से यह लोग मेहनत मजदूरी के कार्य करने के लिए बाहर नहीं जाते हैं। उनके निवास स्थान से के सामने ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड है, जहां पर कभी-कभी इन लोगों को वहां पर मजदूरी का कार्य मिलता है। अधिकांश लोग कोयला चुनने का कार्य करते हैं दिन भर कोयला चुनाव करने के बाद 200 से 300 रुपया प्राप्त करते हैं जिससे इनका जीवन चलता है।

शोध का महत्व :-

1. सौरिया समाज के वास्तविक विकास के लिए यह जरूरीहै कि उनकी मुख्य समस्या और चुनौतियों पर विचार किया जाए।
2. सौरिया पहाड़िया जनजातियों की बिगड़ती स्थिति को संरक्षित और सुरक्षित किया जाए ताकि उनकी समस्याओं का समाधान हो।
3. सौरिया पहाड़िया जनजातियों की स्थिति सुधारने के लिए शिक्षा, चिकित्सा, रोजगार और जागरूकता के लिए प्रोत्साहित करना अति आवश्यक है ताकि उनकी स्थिति को सुदृढ़ किया जा सके।

निष्कर्ष :-

सौरिया पहाड़िया जनजाति लोगों के पास अनेक समस्याएं व्याप्त है। चूँकि इन जनजातियों से जब तथ्य प्राप्त किया गया तो यह सामने निकल कर आया कि यह लोग काफी निर्धन है। गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन कर रहे हैं, इनके पास रोजगार का कोई साधन नहीं है और न हीं कृषि योग्य भूमि है। क्योंकि उनके घर के सामने ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड है वहां पर इनका कभी भूमि हुआ करता था और यह सुचारू रूप से कृषि कार्य करते थे। जिससे इन लोगों को खाद्य पदार्थ का अभाव नहीं होता था लेकिन वह जमीन सरकार ने ले लिया और उसे जगह पर ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड स्थापित किया गया जिसके कारण यह लोग जमीन खोकर भूमिहीन हो गए हैं। सौरिया पहाड़िया लोग जंगल में झोपड़ी बनाकर बसेरा कर रहे हैं और उनके गांव में कोई विद्यालय नहीं है, कोई स्वास्थ्य केंद्र नहीं है, और न हीं आंगनबाड़ी केंद्र है जिसके कारण यह लोग अभी भी पारंपरिक तरीके से अपने जीवन को यापन कर रहे हैं। प्रकृति के गोद में सौरिया पहाड़िया का निवास स्थान तो जरूर है लेकिन उनकी समस्याओं का अंत नहीं है। यह जनजाति अभावग्रस्त में ही अपना जीवन जी रही हैं। उनके निवास स्थान के आसपास या उनके गांव में कोई एक भी दुकान नहीं है और इन्हें कुछ सामग्री की आवश्यकता होती है तो यह लोग 8 से 10 किलोमीटर जाकर आवश्यकता आधारित सामग्री को लाते हैं। क्योंकि इनका निवास स्थान बिल्कुल जंगल में है जिसके कारण अनेक बधाए व्याप्त है। यही सब कारण है कि यह सौरिया पहाड़िया जनजाति सामाजिक रूप से लेकर आर्थिक स्तर तक काफी पिछड़े हुई है।

संदर्भ सूची:-

1. Chowdhury, S., S. (2018). The sauria Paharia of Malda District in West Bengal: a Study on Their Socio-economic Situation. *Dept of Anthropology West Bengal State University.* Vol (2). 92-93. Retrieved from https://wbsu.ac.in/web/wp-content/uploads/2024/01/sen-chaudhury.pdf
2. Dutta, D. & Sarkar, A., K. (2019). Relevance Of Implementation Of Financial Inclusion Among Tribal Groups Of Jharkhand: A Study On Paharia Tribe. *THINK INDIA JOURNAL.* 22 (14). 2135-2141. Retrieved from https://thinkindiaquarterly.org/index.php/think-india/article/view/12707/8001
3. Marandi, S. & Patel. S. (2022). Livelihood, Seasonal Migration and Children's Education among the Sauria Paharia Tribes: A Case Study from Rajmahal Hill region of Santhal Pargana, Jharkhand. *International Journal of Advanced Multidisciplinary Research.* 9 (11). 81-84. DOI: 10.22192/ijamr
4. Choudhary, K., S. (2024). Socio-economic Change Among the Tribal Women: an Anthropological Study of the p.v.t.g Sauriya Paharia of Kahalgaon, Bhagalpur. *Indian Journal Of Society And Politics.*11(01).97-99. Retrieved from https://ijsp.in/admin/mvc/upload/IJSP%2011(01)%202024_15.pdf
5. Sunita, (2023). Status of Santhal, Sauria Paharia and Kharwar tribes of Bihar and role of media in awareness generation. *Annals of Anthropological Research & Reviews*. 3 (1). 58-60. Retrieved from https://www.journal.skbu.ac.in/published/paper_full_text/371401710934768.pdf?v=1718396508
6. Kumar, R. & Verma, D., N. (2022). Tracing Contemporary Problems of Autochthon Paharias of Santal Parganas (Jharkhand) in Historical Perspective. *Ideal Research Review.* 70 (1) . 13-16. Retrieved from https://journalirr.com/wp-content/uploads/2022/07/Ranjan-Kumar-4.pdf
7. Chaoudhary, A., K. (2018). Tribal Economy of Jharkhand : Crying on its Piteous Position. *Journal of Emerging Technologies and Innovative Research.*5 (9). 139-142. Retrieved from https://www.jetir.org/papers/JETIR1809029.pdf
8. Tudu, D. & Michael, K., A. (2018). Out- Migration of Paharia Tribal Labourers from Pakur District of Jharkhand: A Case Study. *International Journal of Humanities and Social Science Invention*. 7 (8). 25-26. Retrieved from https://www.ijhssi.org/papers/vol7(8)/Version-1/E0708012528.pdf
9. Kachhap, R., S. & Saw, G., P. (2016). A mapping stature regarding problems and its associated factors of Tribal Communities of Jharkhand. *International Journal of Humanities & Social Science Studies.* 2 (6). 155-157. Retrieved from https://oaji.net/articles/2016/1115-1464936457.pdf